How can impact evaluation methodologies capture gender equity impacts?

Madhya Pradesh Energy Efficiency Improvement Investment Program

Technical Assistance: Enhancing Energy–based Livelihoods for Women Micro–Entrepreneurs

2 September 2016

The views expressed in this presentation are the views of the author/s and do not necessarily reflect the views or policies of the Asian Development Bank, or its Board of Governors, or the governments they represent. ADB does not guarantee the accuracy of the data included in this presentation and accepts no responsibility for any consequence of their use. The countries listed in this presentation do not imply any view on ADB's part as to sovereignty or independent status or necessarily conform to ADB's terminology.

How does electricity impact gender?

- Increased income of women entrepreneurs trained on energy–based business support activities
- At least 20% increase in time spent by women on rest, recreation and learning activities
- Increased study time for children
- For women running micro-enterprises, electrification means more income

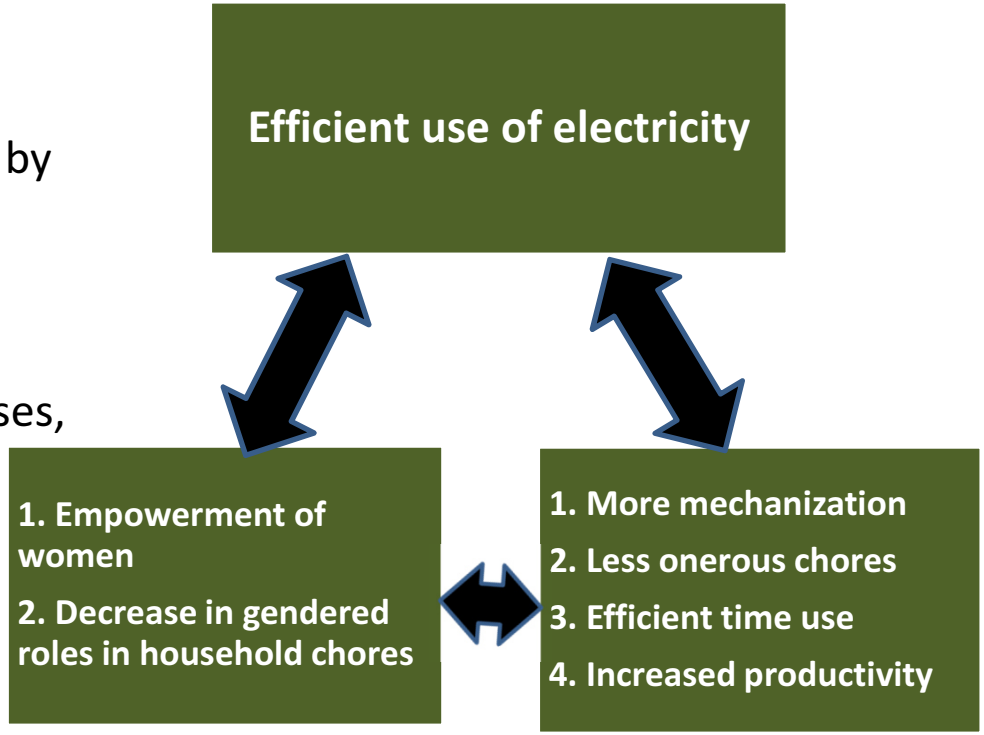

- ***More equitable intra-household division of labor***
- ***Empowerment of women***

50 YEARS

ADB

Interventions and Objectives

Name of interventions	Details
MFF: Madhya Pradesh Energy Efficiency Improvement Investment Program (Tranche 1 – Loan 2734)	• Feeder seperation • Installation of High Voltage Distribution Systems (HVDS) • Supply quality improvement and metering • Upstream 33 kV Network Strengthening
TA7831 (Gender Action Plan)	• Integrated Entrepreneurship Module (IEM): 20729 • 506: IEM + Gender and Energy training • 1650: IEM + Skills Training • 517: IEM + Skills Training + Business DS

The objectives of the evaluation exercise are:

- ***Does feeder separation improve women's quality of life and empowerment?***
- ***Do training programs on efficient energy use in micro-enterprises improve the quality of life for SHG women participants?***

Theory of change (Feeder Separation)

- Feeder Separation
  - Stable power Supply
    - Reliable lighting
      - Longer work hours
        - Higher income
      - Perception of safety
        - Greater mobility
      - Longer study hours for children
      - Time saving
        - More leisure time
        - Use of time for more productive use
      - Lessening of drudgery
      - Better health
    - Use of electrical appliances

Theory of change (Training of women)

Training TA

Integrated energy, gender and enterprise module (IEM)

Efficient use of electricity & machines in production

- Gender & Energy Training (GET)
- Skills Training (ST) only
- ST + Business Development Skills (BDS)

Higher Productivity in

Higher income

Greater decision making power

Better quality of life

Evaluation Design (TA)

- Divide the study population into groups
  - Non-SHG women
  - SHG women (not trained by the TA)
  - SHG women trained by TA

Division of population into treatment and control groups

- Conduct a household survey with 3 main modules
  - Usage of electricity, electrical appliances and machines
  - Time use in different household chores
  - Income levels and decision making power of women

Collect household level data through a survey

- Conduct a between group analysis to find out
  - Whether efficient use of electricity results in betterment of quality of life
  - Whether various types of training have additional beneficial impacts on quality of life of women

Estimate marginal impacts of training and electricity use

ADB

मानपुरा का 'मान' बढ़ा रही 'लाख' की चूड़ियां

गांव में दो महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्य अपने हाथों से तैयार करती हैं चूड़ी और कंगन, आसपास के क्षेत्रों में है मांग

शादी में भले ही दुल्हन सोने के कंगन पहन ले, लेकिन हाथों की शोभा लाख की चूड़ियों से ही बढ़ती है और जब इन चूड़ियों को महिलाओं ने अपने हाथों से तैयार किया हो तो समझो सोने पर सुहागा हो गया।

भास्कर संवाददाता | झाबुआ

जिला मुख्यालय से 15 किमी दूर है ग्राम मानपुरा। गांव के लक्ष्मी व संतोष स्वयं सहायता समूह की महिलाएं अपने हाथों से लाख के आकर्षक कंगन और चूड़ियां बनाती हैं, जिनकी आसपास के क्षेत्रों में खूब मांग है। शादी-ब्याह के सीजन में तो समूह की महिलाओं के पास सिर उठाने की भी फुर्सत नहीं रहती। मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान की पत्नी साधनासिंह भी मानपुरा की महिलाओं के हाथों से तैयार लाख की चूड़ियां पहन चुकी हैं।

दरअसल दोनों समूह की आठ महिलाओं को उनकी रुचि देखते हुए आजीविका मिशन द्वारा खास तौर पर हैंड इन हैंड संस्था के माध्यम से गांव में लाख से चूड़ियां तैयार करने का प्रशिक्षण दिलाया गया था। तकनीकी प्रशिक्षण व रॉ-मटेरियल के लिए महिलाओं को इंदौर भेजा गया। इसके बाद समूह की सदस्य सन्नू बलवंत, राजू दिलीप, सन्नू तोलसिंह, सुनिता राजेश, किरण अशोक व कांता बलवन ने अपने समूह से 2 हजार रुपए का कर्ज लिया और स्वयं 500 रुपए मिलाकर रॉ-मटेरियल खरीदा। फिर अपने स्तर पर लाख की चूड़ियां व कंगन बनाने का काम शुरू किया। शुरुआत में ही उन्हें 10 से 15 हजार का फायदा हुआ। लाख की चूड़ियों के कारोबार ने मानपुरा की महिलाओं का मान बढ़ाने का काम किया है।

लाख की चूड़ियां तैयार करतीं स्वयं सहायता समूह की महिलाएं।

पहले गांव की महिलाओं को टारगेट किया

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने अपने उत्पाद की बिक्री बढ़ाने के लिए पहले गांव की महिलाओं को टारगेट किया। धीरे-धीरे अब आसपास के गांवों से भी शादी-ब्याह के लिए चूड़ी व कड़े के ऑर्डर आने लगे।

मुख्य आय बनेगा व्यापार

महिलाओं ने जिस तरह अपने खाली समय का सदुपयोग कर काम को बढ़ाया है उससे भविष्य में लाख की चूड़ियों का यह व्यवसाय परिवार की आय का मुख्य आधार साबित होगा।

आशीष शर्मा, डीपीओ, ग्रामीण आजीविका मिशन, झाबुआ

साधनासिंह भी हुई कायल

मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने अपने जनसंवाद कार्यक्रम की शुरुआत ही कल्याणपुरा क्षेत्र के ग्राम भगोर से की थी। इस दौरान उनके साथ पत्नी साधनासिंह भी थीं। इस दौरान मानपुरा के स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने अपने हाथों से तैयार लाख की चूड़ी साधनसिंह को पहनाई तो वे भी उनकी कायल हो गईं। बाकायदा अपने लिए अलग से वे चूड़ियों का सेट लेकर गईं।

STAKEHOLDER WORKSHOPS

THANK YOU